विपश्यना

साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

बुद्धवर्ष २५४८, फाल्गुन पूर्णिमा, २५ मार्च, २००५ वर्ष ३४ अंक १०

धम्मवाणी

पूजारहे पूजयतो, बुद्धे यदि व सावके।
पपञ्चसमतिक्कन्ते, तिण्णसोक परिद्दवे॥
ते तादिसे पूजयतो, निब्बुते अकुतोभये।
न सक्का पुञ्ञं सङ्खातुं, इमेत्तमपि केनचि॥
धम्मपद–१९५, १९६

– पूजा के योग्य बुद्धों अथवा उनके श्रावकों- जो (भव-) प्रपंच का अतिक्रमण कर चुके हैं और शोक तथा भय को पार कर गये हैं - निर्वाणप्राप्त, निर्भय हुए - ऐसे लोगों की पूजा के पुण्य का परिमाण इतना होगा, यह नहीं कहा जा सकता।

[धारण करे तो धर्म]

धर्म व संघ के प्रति सही श्रद्धा

(जी-टीवी पर क्रमशः चौवालीस कड़ियों में प्रसारित पूज्य गुरुदेव के प्रवचनों की चौतीसवीं कड़ी का पहला भाग)

श्रद्धा जागे। शुद्ध ज्ञान की गरिमा लिए हुए श्रद्धा जागे। सत्कर्म करने की उमंग लिए हुए श्रद्धा जागे। उल्लास लिए हुए श्रद्धा जागे। अंधश्रद्धा नहीं, खूब समझदारी वाली श्रद्धा जागे। धर्म के प्रति श्रद्धा जागती है तो कहता है –**"धम्मं सरणं गच्छामि"** –धर्म की शरण ग्रहण करता हूं। कौन-सा धर्म? हिंदू धर्म नहीं, बौद्ध धर्म नहीं, जैन धर्म नहीं, ईसाई धर्म नहीं, सिक्ख धर्म नहीं, मुस्लिम धर्म नहीं। धर्म जो अनंत है। **अप्पमाणो धम्मो** – अपरिमित होता है तो धर्म होता है। सबका होता है तो धर्म होता है। हिंदू-धर्म केवल हिंदुओं का हो करके रह जायगा, बौद्ध-धर्म केवल बौद्धों का हो करके रह जायगा। इसी प्रकार जैन-धर्म, ईसाई-धर्म, मुस्लिम-धर्म एक वर्ग-विशेष का हो करके रह जायगा। एक समूह-विशेष का हो करके रह जायगा। धर्म तो सबका और धर्म की शरण माने धर्म वह जो मैं अपने भीतर धारण कर रहा हूं। 'गच्छामि', धर्म के रास्ते गमन कर रहा हूं। चल रहा हूं तो धर्म शरण देगा। तो ही सही माने में शरण है। क्या होता है सार्वजनीन धर्म, सार्वदेशिक धर्म, सार्वकालिक धर्म? उसको भी मापने के लिए अपने मापदंड हैं।

स्वाक्खातो भगवता धम्मो सन्दिट्ठिको अकालिको एहिपस्सिको ओपनेय्यिको पच्चत्तं वेदितब्बो विञ्ञूहीति।

'**स्वाक्खातो**', सुआख्यात है। अच्छी तरह समझाया गया है। कोई उलझन नहीं है उसमें कि ऊपर-ऊपर से उसका ऐसा अर्थ है और इसके भीतर एक गूढ़ अर्थ है जो कोई-कोई समझ पाते हैं। अरे भाई, तो वह गूढ़ अर्थ क्या काम आया जिसे कोई-कोई समझ पाये? धर्म तो सबके लिए होता है ना! पढ़ा-लिखा हो, अनपढ़ हो, शहरी हो, गांव का हो, क्या फर्क पड़ता है? समझना चाहिए ना? तो बड़ी सरल-सरल भाषा में, जो सब लोग समझ सकें, इस प्रकार समझाया गया हो, तो 'स्वाक्खातो', सुआख्यात है। कोई पहेलियां नहीं बूझनी है। बड़ा स्पष्ट, बड़ा स्पष्ट।

'**सन्दिट्ठिको**, धर्म है तो सांदृष्टिक होगा। आंखों के सामने जो सच्चाई आ रही है, उसी के सहारे-सहारे, स्वयं अपनी अनुभूति पर जो सच्चाई उतर रही है, बस, उसी के सहारे-सहारे चलेगा। **आदि सचु जुगादि सचु, है भी सचु, नानक होसी भी सचु**। सच के ही सहारे-सहारे; सारे सचखंड की यात्रा सच के सहारे-सहारे होगी तब 'सन्दिट्ठिको'। कल्पनाएं नहीं। सत्य के सहारे-सहारे चलेगा तो आगे जाकर के परम सत्य तक पहुँच जायगा। किसी कल्पना के सहारे चलेगा तो कहीं किसी बड़ी कल्पना में उलझ कर रह जायगा, कल्याण नहीं होगा, मंगल नहीं होगा। तो 'सन्दिट्ठिको'।

'**अकालिको**, उसका फल आने में काल नहीं लगता माने समय नहीं लगता। अभी धारण करो, अभी फल; अभी धारण करो, अभी फल। इस क्षण परिणाम आ रहे हैं कि नहीं? कोई कहे, धारण तो अब करो, पर परिणाम मरने के बाद आयेगा तो कहीं कुछ गड़बड़ है। मरने के बाद परिणाम आएंगे सो आएंगे, वह अलग बात, लेकिन अब क्या परिणाम आ रहे हैं? अगर अभी मेरा सुधार नहीं हो रहा, अभी विकारों से जरा-जरा भी मुक्ति नहीं हो रही। और कोई समझे कि मरने के बाद मुक्ति हो जायगी। किसी की कृपा से मुक्त हो जाऊंगा। अरे, धोखा ही धोखा है भाई! वर्तमान सुधरता है तो भविष्य अपने-आप सुधर जाता है। लोक सुधरता है तो परलोक अपने आप सुधर जाता है। वर्तमान को सुधारना ही धर्म है। लोक को सुधारना ही धर्म है। इस जीवन को सुधारना ही धर्म है। आगे की चिंता करने की हमें जरूरत नहीं। इस क्षण को सुधारें, अगला क्षण तो इस क्षण की ही संतान है। वर्तमान को सुधारें, भविष्य तो वर्तमान की ही संतान है, आप ही सुधर जायगा। तो 'अकालिको'।

धर्म का एक और गुण –'**एहिपस्सिको**, आओ, देखो, तुम भी देखो। रहा नहीं जाता। जब कोई व्यक्ति विपश्यना के किसी शिविर में आता है, पांचवां दिन होते-होते, छठवां दिन होते-होते, किसी-किसी को सातवां दिन होते-होते रहा नहीं जाता। मन में ऐसे विचार उठने लगते हैं –अरे, ऐसा कल्याणकारी मार्ग है! इसे तो मेरी मां भी करे रे! इसे तो मेरा पिता भी करे। मेरा पति करे, मेरी पत्नी करे, मेरा पुत्र करे, मेरी पुत्री करे, मेरा अमुक मित्र करे। अरे, वह मित्र बड़ा दुखियारा है। उसके यहां एक ऐसी दुर्घटना हो

गयी। वह अगर कर ले तो दुःखों के बाहर हो जायगा। फिर होश आता है, अरे, यह तो शिविर पूरा होने के बाद करेंगे ना! अब तो सांस को देखना है, शरीर के भीतर होने वाली संवेदनाओं को देखना है। फिर अपने काम में लग जाता है। फिर नहीं रहा जाता। थोड़ी देर के बाद फिर वही –'एहिपस्सिको', अरे वह भी आकर के देखे! वह भी करके देखे, वह भी करके देखे। 'आशुफलदायी' है ना, तत्कालफलदायी है ना! जब स्वयं को तत्काल फल मिलने लगा, धर्म का रस चखने लगा, भीतर की शांति जरा-जरा-सी भी आने लगी तो जी चाहता है ऐसी शांति औरों को भी मिले। विकारों से विमुक्त होने का ऐसा मार्ग औरों को भी मिले, "एहिपस्सिको, एहिपस्सिको।" दस दिन पूरा होने पर तो रहा नहीं जाय। परिवार के उस सदस्य से कहे, उस सदस्य से कहे, अपने इस मित्र से कहे, उस मित्र से कहे। अरे, तू भी करके देख, तू करके तो देख! इसी को कहा धर्म का यह गुण –'एहिपस्सिको'।

'**ओपनेय्यिको**', कदम-कदम अंतिम लक्ष्य तक ले जाने वाला। जैसे कोई राजमार्ग है। ऋजु माने सीधा राजमार्ग, जो अंतिम लक्ष्य तक सीधा ले जायगा। कोई अंधी गली नहीं है कि वहां से वापस मुड़ के आना पड़े। एक-एक कदम लक्ष्य की ओर ले जाये जा रहा है। धर्म के मार्ग पर थोड़ा भी किया हुआ अभ्यास, मेहनत, परिश्रम व्यर्थ नहीं जाता; जा ही नहीं सकता। जितना किया उतना फल आएगा ही। आदि में कल्याणकारी, मध्य में कल्याणकारी, अंत में कल्याणकारी। आरंभ करते ही कल्याण शुरू हो गया। शील का काम शुरू किया। शील पालन करने लगा, कल्याण होना शुरू हो गया। समाधि का अभ्यास करने लगा, अरे, और कल्याण होने लगा। प्रज्ञा जगाने लगा तो कहना ही क्या, और कल्याण होने लगा; और कल्याण होने लगा। और कहीं निर्वाण का साक्षात्कार कर लिया तो कल्याण ही कल्याण। आदमी बदल गया। भले कुछ क्षणों के लिए ही निर्वाणिक अवस्था का अनुभव करके फिर इंद्रिय-जगत में आया, बदल गया, संत हो गया। तो कल्याण ही कल्याण, कदम-कदम कल्याण, कदम-कदम कल्याण।

'**पच्चत्तं वेदितब्बो विञ्ञूहीति**', प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर सच्चाई का दर्शन कर सकता है, करना ही चाहिए समझदार व्यक्ति को। किसी को अपने अंधेपन में किन्हीं काल्पनिक मान्यताओं के साथ इतना गहरा चिपकाव हो कि काम ही न करे, तो कोई क्या करे? अन्यथा जो काम करेगा, अंतर्मुखी होकर सच्चाई को देखने लगेगा तो उसी का कल्याण होने लगेगा। हर समझदार व्यक्ति को अपने भीतर धर्म का दर्शन करना ही चाहिए।

धर्म के ये गुण हैं। इस मापदंड से धर्म मापा जाता है कि सार्वजनीन है ना, सबके लिए है ना! कहीं कोई जांत-पांत का भेदभाव तो नहीं? कहीं कोई वर्ण-गोत्र का भेदभाव तो नहीं? कहीं इस संप्रदाय, उस संप्रदाय का भेदभाव तो नहीं? कहीं ऐसा तो नहीं कि पहले मेरे संप्रदाय में दीक्षित हो जाओ, तब यह धर्म तेरा कल्याण करेगा। पहले मेरे सांप्रदायिक बाड़े में बँध जाओ, तब यह धर्म तेरा कल्याण करेगा। अरे, किस बाड़े में बँधें भाई? बाड़े तोड़ने के लिए धर्म होता है। सार्वजनीन धर्म होता है, खूब समझ में आये, खूब समझ में आये।

इसी प्रकार श्रद्धा जागे, संघ के प्रति श्रद्धा जागे तो कहता है –**सङ्घं सरणं गच्छामि**। फिर व्यक्ति की नहीं, व्यक्ति के गुणों की शरण है। कौन संघ होता है –

सुप्पटिपन्नो भगवतो सावकसङ्घो, उजुप्पटिपन्नो भगवतो सावकसङ्घो, ञायप्पटिपन्नो भगवतो सावकसङ्घो, सामीचिप्पटिपन्नो भगवतो सावकसङ्घो, यदिदं चत्तारि पुरिसयुगानि अट्ठपुरिसपुग्गला एस भगवतो सावकसङ्घो।

–जो ऋजुमार्ग पर चल रहा है, सही मार्ग पर चल रहा है, ज्ञान के मार्ग पर चल रहा है, समुचित मार्ग पर चल रहा है और यों चलते-चलते जिस दिन निर्वाण का साक्षात्कार कर लिया –मुक्ति की जो चार अवस्थाएं हैं उनमें से कम से कम पहली अवस्था तो प्राप्त कर लिया, वह स्रोत में तो पड़ गया, मुक्ति के स्रोत में तो पड़ गया। ऐसा व्यक्ति संघ हो गया। कोई हो। गृहस्थ हो या भिक्षु हो। कोई हो। शील, समाधि, प्रज्ञा में प्रतिष्ठित होकर ही निर्वाण का साक्षात्कार होगा। निर्वाण का साक्षात्कार होगा माने इंद्रियातीत परम सत्य का साक्षात्कार होगा।

पच्चीस सौ वर्षों में या यों कहें दो हजार वर्षों में अपने देश की क्या दशा हुई? यह निर्वाण शब्द का अर्थ ही भुला बैठे। मुझे याद है, बर्मा से पहले-पहल आया, दो-चार शिविर दिये होंगे। कोई एक भाई शिविर में आया। अच्छा काम किया उसने। आकर अपनी कृतज्ञता प्रकट की, तो कह दिया मैंने कि तुझे जल्दी से जल्दी निर्वाण प्राप्त हो। बड़ा घबराया। निर्वाण प्राप्त हो! अरे, गुरुजी, हमें आप कोई आशीर्वाद दीजिए। मैं तो अभी बहुत जीना चाहता हूं। आपने यह क्या कह दिया, निर्वाण प्राप्त हो! अरे, देश ने निर्वाण शब्द का सही अर्थ ही खो दिया। अब तो यहां निर्वाण का मतलब मृत्यु याने हमने उससे कहा, तू जल्दी से जल्दी मृत्यु प्राप्त कर। अरे, इसी जीवन में जीते-जी निर्वाण का साक्षात्कार होता है। विद्या ही खो दी ना देश ने, तो क्या समझे? इसी जीवन में, भले ही क्षणभर के लिए हुआ, निर्वाण का साक्षात्कार हुआ, अनार्य से आर्य बन गया। दुर्जन से सज्जन बन गया, संत बन गया, तो संघ बन गया।

क्रमशः

धम्मगिरि तथा धम्मतपोवन पर शीतकालीन शिविर

धम्मगिरि

आचार्य स्वयं शिविरः ११ से २६-११

(**पात्रता** –धर्म प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान और कम से कम एक सतिपट्ठान शिविर। जिन्होंने पहले कभी आचार्य स्वयं शिविर न किया हो उन्हें प्राथमिकता दी जायेगी।)

ट्रस्टी एवं धर्मसेवक कार्यशालाः २७ से २८-११

सहायक आचार्य कार्यशालाः ८ से ९-१-०६

४५-दिवसीयः १०-१ से २५-२-०६

धम्मतपोवन

६०-दिवसीयः ७-११ से ७-१-०६

१०-दिवसीयः १० जनवरी से २६ फरवरी तक

पूज्य गुरुजी और माताजी का नाशिक में आगमन

५ मार्च की शाम को पू. गुरुजी और माताजी का सर्वप्रथम नाशिक विपश्यना केन्द्र पर पदार्पण हुआ।

धम्मनासिका विपश्यना केन्द्र नाशिक शहर से बाहर एकान्त स्थान पर सत्रह एकड़ भूमि पर बनाया जा रहा है। यह भूमि नाशिक नगर निगम द्वारा दी गयी है। केन्द्र पर शिविर आयोजित किये जा रहे हैं, पर सुविधाएं सीमित हैं अतः अभी या तो सिर्फ पुरुषों के या सिर्फ महिलाओं के शिविर आयोजित होते हैं।

जब पू. गुरुजी नाशिक पहुंचे तो केन्द्र के द्वार पर उनका अनौपचारिक स्वागत नाशिक नगर के पूर्व महापौर श्री दशरथ पाटिल ने किया। उसके बाद कुछ न्यासियों, सहायक आचार्यों तथा वास्तुकार पू. गुरुजी को केन्द्र के सबसे ऊंचे स्थान पर ले गये जहां से केन्द्र का पूरा क्षेत्र तथा नाशिक शहर का अधिकांश भाग दिखाई पड़ता है। उन लोगों ने पू. गुरुजी को भविष्य के निर्माण योजना के बारे में बताया।

इस समय तक हजार से भी अधिक विपश्यी साधक केन्द्र पर पू. गुरुजी के सान्निध्य में खुली जगह में ध्यान करने के लिए पहुंच गये थे। पू. गुरुजी तथा माताजी ध्यानसत्र में लगभग ६.२० बजे पहुंचे। विपश्यना साधना के अंत में मंगल मैत्री सत्र में पू. गुरुजी ने संक्षेप में धर्म प्रवचन दिया। उन्होंने केन्द्र के प्रबन्धन का तथा केन्द्र पर सेवा देने का उचित मार्गदर्शन दिया।

उन्होंने उन मौलिक सिद्धान्तों को एक बार फिर दोहराया जिन पर पूरे विश्व में विपश्यना केन्द्र चलते हैं। उन्होंने चेताया कि 'धर्म को व्यापार नहीं बनने देना है। विपश्यना केन्द्र को जाति, धर्म तथा सामाजिक पृष्ठभूमि के आधार पर भेद न करके सभी की सेवा करनी चाहिए। यह मुट्ठी भर धनी लोगों की सम्पत्ति बनकर न रह जाय।

उन्होंने दो बातों पर विशेष जोर दिया। केन्द्र व्यावसायिक न बने और यहां सेवा देने वाले लोग अहंकार रहित हो बदले में बिना किसी प्राप्ति की आशा किये धर्मसेवा करें। सहायक आचार्यों को भौतिक लाभ प्राप्त करने का प्रश्न ही नहीं उठता है, लेकिन कभी-कभी कुछ पूर्णकालिक धर्मसेवकों को जिन्हें आवश्यकता है कुछ आर्थिक सहायता दी जाती है। जो हो, चाहे कोई आर्थिक सहायता पा रहा हो या नहीं, चाहे सहायक आचार्य हो या नया धर्मसेवक, हर कोई धर्मसेवक है। हर कोई धर्मसेवक है। ऐसी चेतना वाले लोग ही विपश्यना केन्द्र पर सेवा देने के योग्य हैं।

यद्यपि धर्मसेवक धर्मासन पर बैठकर धर्म की व्याख्या नहीं करता, फिर भी वह धर्मदान में अपना हाथ बंटाकर प्रभूत पुण्य का अर्जन करता है। **सब्बदानं धम्मदानं जिनाति** –सब दानों में धर्मदान ही श्रेष्ठ है। चाहे कोई केन्द्र पर सेवा दे रहा है या केन्द्र के विकास में किसी और तरीके से सहायता कर रहा है वह धर्मदान ही दे रहा है। यह अभी तथा बाद में अत्यंत आनंद देने वाला है।

प्रवचन के बाद पू. गुरुजी और माताजी ने धम्मनासिका से प्रस्थान किया। यद्यपि कुछ दिनों से इस केन्द्र पर दस-दिवसीय शिविर ही आयोजित हो रहे हैं, पर सभी धर्मसेवकों ने यह अनुभव किया कि धम्मनासिका का सही उद्घाटन पू. गुरुजी के पदार्पण से हो गया।

पू. गुरुजी और माताजी फिर ६ मार्च को नाशिक आये जहां उन्होंने आईरीन (इंडियन रेल्वेज इन्स्टीट्यूट ऑफ इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग) में प्रवचन दिया। यहां हजारों लोग प्रवचन सुनने के लिए एकत्र हुए थे। आईरीन जाते समय पू. गुरुजी और माताजी दादासाहब गायकवाड केन्द्र पर ध्यान और मंगल मैत्री के लिए रुके। यहां सुंदर बरमी पगोडा अभी-अभी बना है। आईरीन में, संस्थान के निदेशक श्री खाडे ने पू. गुरुजी से प्रवचन करने का अनुरोध किया। पू. गुरुजी ने धर्म (पालि-धम्म) के सही अर्थ को बताया।

नाशिक विपश्यना केंद्र –म.न.पा. जलशुद्धिकरण केंद्र के सामने, शिवाजी नगर, सातपुर, (पोस्ट-YCMOU), नाशिक-४२२२२२. फोन: (०२५३) ५६१६२४२.
Email: info@nasika.dhamma.org

उत्तरदायित्वों में परिवर्तन

आचार्य

1. & 2. Mr. Don & Mrs. Sally McDonald, ***Australia***, -- Worldwide Course Statistics and to serve Indonesia, Malaysia and Singapore
3. Ven. Bhikkhuni Ming Chia Shih, ***Taiwan***, -- To serve Hong Kong and Taiwan including *Dhammodaya*

नए उत्तरदायित्व

आचार्य

1. & 2. Dr. Shwe Tun Kyaw & Dr. (Mrs.) Sann Sann Wynn, *UK -- To spread Vipassana among expatriate Myanmar*
3. Mr. George Hsiao, *Taiwan* -- To serve Korea and to assist the area teacher in serving People's Republic of China

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्री परशुराम गौतम, म्यंमा, धम्ममकुट एवं धम्मरतन की सेवा
2. U Tin Maung Shwe, *Myanmar* धम्ममण्डल एवं धम्ममण्डप की सेवा
3. Daw Win Kyi, *Myanmar* धम्ममण्डल एवं धम्ममण्डप की सेवा
4. & 5. U Kyaw Khin & Dr. Daw Mya Mya, *Myanmar* सहायक आचार्यों की मीटिंग तथा ट्रस्टी एवं धर्मसेवकों की कार्यशाला आयोजन की सेवा
6. Daw Sein Sein, *Myanmar* सहायक आचार्यों की मीटिंग तथा ट्रस्टी एवं धर्मसेवकों की कार्यशालाओं के आयोजन की सेवा
7. & 8. U Thaung Pe & Daw Myint Myint Tin, *Myanmar* धम्मजोति की सेवा
9. Daw Saw Mya Yee, *Myanmar* धम्मजोति की सेवा
10. Mr. Dirk Taveirne & Mrs. Mieke De Wilde, *Belgium* धम्मपज्जोत की सेवा में स्थानीय आचार्यों की सहायता
११. कु. पुष्पा गाला, हैदराबाद
१२. श्री विश्राम हलाई, भुज
१३. डॉ.(कु.) शांतुबेन बालजी पटेल, भुज
१४. कु. जयाबेन वेलजी गडा, कच्छ
१५. कु. नीता शाह, बैंगलोर
16. Ms. Kazuko Kitamura, *Japan*
17. Ms. Eilona Ariel, *Israel*
18. Mr. Martin Haig, *Australia*
19. Ms Marie De Roy, *Canada*
20. Mr. Sau Thach, *USA*
21. Ms. Julie Schaeffer, *USA*
22. & 23. Mr. Craig & Mrs. Jeanine Rublee, *USA*
24. & 25. Mr. Julian & Mrs. Marie Cohen, *USA*
26. & 27. Mr. Norm & Mrs. Debra Kosky, *USA*
28. & 29. Mr. Peter & Mrs. Teri Kerr, *USA*

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. डॉ. शंकरराव देवरे, धुले
२. सुवर्णकुमारी बज्राचार्य, नेपाल
4. Mrs. Harbhajan Leal, *UK*
5. Ms. Virginia Lai-Chun Tang, *USA*
6. & 7. Mr. Charles Brunner & Mrs. Lynne Donaldson, *USA*

बाल शिविर-शिक्षक

१. श्री जितेंद्र मुले, पुणे २. श्रीमती सुनंदा राठी, पुणे
३. श्री प्रज्ञावंत खोब्रागडे, अमरावती
४. श्री मदनमोहन मालवीय, बुरहानपुर
५. श्री ओंकार मौर्य, खंडवा
६-७. श्री दिलीपकुमार एवं श्रीमती मधुबाला मीणा, बांसवाड़ा
८. श्रीमती रजनी भारद्वाज, जयपुर
९. श्री सूरजनारायण खूंटेटा, जयपुर
१०. श्री सत्यपाल शर्मा, जयपुर
11. Ms. Kim Heacock, *USA*
12. Ms. Deborah Ann Davis, *USA*

केंद्र विस्तार

'धम्मालय' विपश्यना केंद्र का स्थानांतरण हुआ। नया प्रांगण अधिक सुंदर और विस्तृत (२२.५ एकड़) है। इस पर लगभग ८० साधकों के लिए सुविधासंपन्न निवासादि तथा २५० के हाल का निर्माणकार्य पूरा हो चुका है और हर महीने दो शिविर नियमितरूप से लगने लगे हैं। परंतु दिनोंदिन साधकों की संख्या बढ़ती जा रही है और हर शिविर में अनेकों को निराश होना पड़ता है। अतः कुछ नए निवास बनाने (दो बिस्तर वाले १२ निवास) और दीर्घ शिविरों की सुविधा हेतु व्यवस्थापकों ने तथा १६२ शून्यागारों वाले पगोडा का प्लान बनाया है। (फिलहाल ४९ शून्यागारों पर काम चल रहा है।) साधकों के लिए असीम पुण्य अर्जित करने का यह अनुपम सुअवसर है। जो भी साधक चाहें, इसका लाभ उठा सकते हैं। **संपर्क –दक्खिन विपश्यना अनुसंधान केंद्र, कोल्हापुर** (पूरा पता कार्यक्रम में देखें)

नवोदित विपश्यना केंद्र

विपश्यना ट्रस्ट, जबलपुर ने भारत के मध्य क्षेत्र में नए विपश्यना केंद्र के निर्माण का बीड़ा उठाया है। पूज्य गुरुजी ने इसे 'धम्मबल' से संबोधित किया है। इसका निर्माण कार्य तीव्रगति से आरंभ हो चुका और आशा की जाती है कि आगामी १९ से ३० मई तक इस पावन परिसर में एक शिविर का आयोजन भी संपन्न हो सकेगा।

यहां भी साधकों के लिए असीम पुण्य अर्जित करने का सुअवसर उत्पन्न हुआ है। जो भी साधक चाहें, इसका लाभ उठा सकते हैं। 'विपश्यना ट्रस्ट, जबलपुर' को ८०-जी के अंतर्गत आयकर की छूट मिल गयी है। **संपर्क : विपश्यना ट्रस्ट, जबलपुर,** ३३, सिविक सेंटर, दूसरी मंजिल, दवा बाजार, जबलपुर-४८२००२, (म.प्र.) फोनः ०७६१-५००६२५२, २४१०४७४.

दोहे धर्म के

नमन करूं मैं धरम को, कैसा पावन पंथ।
इस पथ पर जो भी चले, सहज बन गए संत॥

नमन करूं मैं धरम को, सम्प्रदाय से दूर।
जो धारे हित सुख सधे, मंगल से भरपूर॥

जो हिन्दू न बौद्ध है, जो मुस्लिम ना जैन।
शुद्ध धरम मंगलकरण, देय शांति सुख चैन॥

नमन करूं मैं संघ को, कैसे श्रावक संत।
धर्म धार उजले हुए, निर्मल हुए भदंत॥

करूं वंदना संघ की, सादर करूं प्रणाम।
जगे प्रेरणा मुक्ति की, मिले सुखद परिणाम॥

करूं वंदना संघ की, जो जग धरम जगाय।
जाति वर्ण के भेद बिन, संतों का समुदाय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा.) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई-४०० ०१८
फोनः २४९३ ८८९३, फैक्सः २४९३ ६१६६
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

नमन करूं मैं धरम नै, संप्रदाय स्यूं दूर।
जन जन रै कल्याण हित, मंगळ स्यूं भरपूर॥

नमस्कार है धरम नै, किसौं क उत्तम पंथ।
पतितां नै पावन करै, करै दुरजनां संत॥

धरम मिल्यो निरमळ हुयो, जीवन तन मन प्राण।
चित छायी कितग्यता, चित छायो अहसान॥

नमन करूं मैं संघ नै, जो जग धरम जगाय।
जात बरण रो भेद ना, संतां रो समुदाय॥

नमस्कार है संघ नै, किसा क स्रावक संत।
धरम धार उजळा हुया, निरमळ हुया भदंत॥

धरम रतन रक्छित रख्यो, धन! धन! संत समाज।
सेवा ही करता रह्या, जग दुख मेटण काज॥

नाकोडा
१ नाकोडा कोर्ट, ११०, शिवाजी नगर, पूणे-४११००५, महाराष्ट्र
फोनः ०२०-४०११७७७, मोबाईलः ९८२२५-१५८००
Email: sandeep@nakodahealthcare.com
Website: www.nakodahealthcare.com
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, दूरभाष : (०२५५३) २४४०८६, २४४०७६.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, ६९- बी रोड, सातपुर, नाशिक-४२२००७. **बुद्धवर्ष २५४८, फाल्गुन पूर्णिमा, २५ मार्च, २००५**

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-,विदेश में US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. ५००/-, " US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. १९१५६/७१.** Regn. No. AR/NSK-46/2003-05

Licenced to post w**ithout Prepayment of postage** -- Licence number-- **AR/NSK-WP/3**
Posting day- Purnima of Every Month, Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (०२५५३) २४४०७६, २४४०८६
फैक्स : (०२५५३) २४४१७६
e-mail: info@giri.dhamma.org
Website: www.vri.dhamma.org